गुरुकुल एवं वर्तमान शिक्षण पद्धति की आत्मा-'प्रश्नोत्तर प्रविधि'

डॉ.यतीन कुमार चौबीसा सहायक आचार्य(शिक्षा संकाय) विद्या भवन गांधी शिक्षा अध्ययन संस्थान रामगिरी, बड़गांव, उदयपुर, राजस्थान। ई मेल पता:yateenchoubisa@gmail.com

सारांश

शिक्षण की विभिन्न पद्धतियों के अंतर्गत प्रश्नोत्तर प्रविधि का महत्वपूर्ण स्थान है। यह प्रविधि पौराणिक काल से वर्तमान समय तक शिक्षण की विभिन्न विधाओं में प्रयोग की जाती है। इस प्रविधि के माध्यम से विद्यार्थियों में तर्क, चिंतन क्षमता का विकास संभव हो सकता है । इस विधि के माध्यम से गुरु के द्वारा शिष्य के साथ चर्चा करते हुए विभिन्न प्रकार के मुद्दों के प्रति समझ विकसित की जाती है। इसकी सहायता से विभिन्न जटिल से जटिल समस्याओं का निराकरण भी किया जाता है। विद्यार्थियों में तार्किकता के आधार पर अपनी समझ को विकसित करने का अवसर मिलता है । विभिन्न प्रकार के मुद्दों के प्रति संवेदनशीलता को जागृत किया जाता है। गुरुकुल व्यवस्था में प्रश्न उत्तर विधि न केवल शिक्षा के साधन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती थी, बल्कि यह शिक्षा की गुणवत्ता को भी सुनिश्चित करने में मदद करती थी। छात्र अपने विचारों को व्यक्त करके और गुरु से प्रश्न करके ज्ञान को गहराते थे। यह उन्हें न केवल ज्ञान में वृद्धि करता था, बल्कि उनकी समझ और विचारशीलता को भी विकसित करता था। अतः गुरुकुल और वर्तमान समय की पद्धति में प्रश्नोत्तर विधि की प्रासंगिकता है।

की वर्ड: गुरुकुल पद्धति, वर्तमान शिक्षण पद्धति, प्रश्नोत्तर प्रविधि।

प्रस्तावना:

संसार में किसी भी समस्या का समाधान प्रश्न उत्तर के माध्यम से संभव है। संवाद की यह विधि पौराणिक काल से लेकर वर्तमान समय तक चली आ रही है। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में विद्यार्थियों में तर्क व चिंतन क्षमता का विकास करने हेतु प्रश्न उत्तर प्रक्रिया को अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। विद्यार्थी को विषय के प्रति संवेदनशील बनाना एवं उसकी जिज्ञासा को जागृत करने के लिए अध्यापक सदैव प्रश्न उत्तर विधि का प्रयोग करते हैं ।पौराणिक काल में भी गुरु के द्वारा शिष्य के साथ चर्चा, संवाद करते हुए विषय पर विस्तृत ज्ञान प्रदान किया जाता था।

गुरुकुल व्यवस्था में प्रश्नोत्तर प्रविधि:

गुरुकुल प्रणाली में, शिष्य और गुरु के बीच प्रश्नोत्तर विधि का महत्वपूर्ण स्थान था। यह एक सम्पूर्ण शिक्षा प्रक्रिया का हिस्सा था जिसमें शिष्य गुरु के सवालों का उत्तर देते थे और गुरु उनके जवाबों पर आलोचना और विश्लेषण करते थे। इस प्रक्रिया से शिष्य का ज्ञान विकसित होता था और उसे सही मार्ग पर चलने के लिए मार्गदर्शन प्राप्त होता था।गुरुकुल पद्धति के दौरान शिष्य और गुरु के बीच प्रश्नोत्तर विधि का मुख्य उद्देश्य ज्ञान के विस्तार और समझ को बढ़ावा देना है। इस प्रक्रिया में, गुरु अपने शिष्यों से प्रश्न पूछते हैं और उनके द्वारा दिए गए उत्तरों का मूल्यांकन करते हैं। इससे न केवल शिष्य का ज्ञान मापा जा सकता है, बल्कि शिष्य भी गहराई से विचार करने के लिए प्रेरित होते हैं और उनके ज्ञान में सुधार होता है। इस विधि के माध्यम से विद्यार्थी अपने ज्ञान को स्थिर

 Copyright @ 2024 Author

करने के साथ-साथ अपनी सोच को विकसित कर सकते हैं।इस प्रक्रिया के माध्यम से शिक्षा और संदेश को सरलता से समझाया जाता था।यह प्रश्नोत्तर विधि शिक्षा का एक महत्वपूर्ण अंग था, जिससे शिष्य अपने विचारों को स्पष्ट करते थे और ज्ञान की गहराई तक पहुंचते थे।

गुरुकुल में, गुरु शिष्य के प्रति एकाग्रता और समर्पण को बढ़ावा देने के लिए इस विधि का अधिक प्रयोग किया करते थे।यह विधि गुरुकुल के शैक्षिक प्रणाली का महत्वपूर्ण हिस्सा था जिससे शिक्षार्थी का ज्ञान और समझ में सुधार होता था। इस विधि से न केवल शिक्षार्थी का ज्ञान विकसित होता था, बल्कि उसकी सोच भी विकसित होती थी और उसे समस्याओं का समाधान करने के लिए विचारने की क्षमता मिलती थी।

गुरुकुल व्यवस्था में प्रश्न उत्तर विधि का महत्वपूर्ण स्थान था। इस पद्धति में, शिक्षा का मूल मकसद संस्कृति और संस्कार,ज्ञान का प्रसार,सहयोगी भावना का विकास,विचार और समझ की प्रक्रिया का विकास करना और उसे अच्छे गुणों से संपन्न बनाना था।गुरुकुल व्यवस्था में प्रश्न उत्तर विधि न केवल शिक्षा के साधन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती थी, बल्कि यह शिक्षा की गुणवत्ता को भी सुनिश्चित करने में मदद करती थी। छात्र अपने विचारों को व्यक्त करके और गुरु से प्रश्न करके ज्ञान को गहराते थे। यह उन्हें न केवल ज्ञान में वृद्धि करता था, बल्कि उनकी समझ और विचारशीलता को भी विकसित करता था।गुरुकुल पद्धति में विद्यार्थी गुरु से विभिन्न प्रकार के प्रश्न पूछते थे। जिसमें धार्मिक और आध्यात्मिक प्रश्न,वैदिक ज्ञान प्रश्न, विज्ञान और गणित प्रश्न,साहित्यिक प्रश्न,सामाजिक और राजनीतिक प्रश्न उनकी समझ को विकसित करने में मदद करते थे। इन प्रकार के प्रश्न विद्यार्थियों के ज्ञान को विस्तार से समझने में मदद करते थे।

वर्तमान शिक्षण व्यवस्था में प्रश्नोत्तर प्रविधि:

वर्तमान शिक्षण पद्धति में भी प्रश्न उत्तर विधि महत्वपूर्ण है। यह विधि छात्रों के विचारों और समझ को विकसित करने, स्वतंत्र सोच की उत्पत्ति,सकारात्मक सोच की प्रोत्साहन,संवाद कौशल का विकास में मदद करती है। कक्षा कक्ष शिक्षण के अंतर्गत अध्यापक द्वारा विद्यार्थियों को विभिन्न प्रश्नों के माध्यम से संप्रत्यय पर चर्चा करने का प्रयास किया जाता है। विद्यार्थी जटिल से जटिल प्रश्नों को शिक्षक के समक्ष रखते हैं एवं शिक्षक भी विभिन्न उदाहरणों के माध्यम से चर्चा को आगे बढाते हुए प्रश्नों का समाधान प्रस्तुत करते हैं।

वर्तमान शिक्षण व्यवस्था में विद्यार्थियों के प्रश्नों को हल करने के कई तकनीकी उपकरण हैं। इनमें से कुछ प्रमुख उपकरण इंटरनेट और वेबसाइट,एप्लिकेशन्स और सॉफ्टवेयर,ई-लर्निंग प्लेटफॉरम,गूगल इनक्वायरी,सोशल मीडिया,Chatbots,Quiz Platforms,AI Tutoring Systems निम्नलिखित हैं। कई बार शिक्षक विद्यार्थियों के साथ नवीन तकनीकों का प्रयोग करते हुए भी संवाद को आगे बढ़ाते हैं। कक्षा कक्ष शिक्षण के दौरान चर्चा रूपी प्रश्नों के माध्यम से विभिन्न समस्याओं को हल करने का प्रयास किया जाता है । विभिन्न प्रश्नों को पूछने से विद्यार्थियों में विचारों के उत्तेजित होने की स्थिति प्राप्त होती है। इस वजह से उनमें तार्किक चिंतन क्षमता के आधार पर वर्तमान समय की बातों से सामंजस्य स्थापित करने में मदद मिलती है। प्रश्न उत्तर विधि मात्र एक परंपरागत शिक्षण की विधि नहीं है बल्कि यह विद्यार्थियों के साथ जुड़ते हुए उनके विचारों को समझने एवं चिंतन क्षमता के आधार पर चर्चा को आगे बढ़ाने की वास्तविक प्रक्रिया है।

 Copyright @ 2024 Author

प्रश्नोत्तर प्रविधि की समीक्षा:

प्रश्न उत्तर विधि को गुरुकुल पद्धति और वर्तमान शिक्षण पद्धति में थोड़ा-बहुत समान रूप से समझा जा सकता है, लेकिन इन दोनों में कुछ अंतर हैं।

1. संरचना और प्रणाली : गुरुकुल पद्धति में शिक्षक और छात्रों के बीच संवाद बहुत महत्वपूर्ण था जबकि वर्तमान शिक्षण पद्धति में यह एक साधन के रूप में देखा जाता है, जिसमें छात्रों को ज्ञान और समझ के स्रोत के रूप में उपयोग किया जाता है।

2. सामग्री और तकनीक : वर्तमान शिक्षण पद्धति में शिक्षक छात्रों को अधिक तकनीकी और व्यावसायिक ज्ञान प्रदान करते हैं, जबकि गुरुकुल पद्धति में अधिक धार्मिक और सांस्कृतिक शिक्षा दी जाती थी।

3. विचार और सोच की प्रक्रिया : गुरुकुल पद्धति में अधिक ध्यान समर्पितता और ध्यान की प्रक्रिया पर था, जबकि वर्तमान शिक्षण पद्धति में अधिक विचार और सोच की प्रक्रिया पर ध्यान केंद्रित है।

4. समृद्धि का माध्यम : गुरुकुल पद्धति में शिक्षा का मुख्य माध्यम उपदेश और संवाद था, जबकि वर्तमान शिक्षण पद्धति में शिक्षा का माध्यम विभिन्न प्रौद्योगिकी उपकरण और साधन हैं।

इन अंतरों के बावजूद, दोनों पद्धतियों में प्रश्न उत्तर विधि का महत्व और उसका प्रभाव छात्रों के विकास में महत्वपूर्ण है।गुरुकुल पद्धति और वर्तमान समय की शैक्षिक पद्धति में प्रश्नोत्तर विधि की प्रासंगिकता को एक उदाहरण के माध्यम से समझाया जा सकता है।

उदाहरण के रूप में, एक गुरुकुल में गुरु अपने छात्रों से वृक्ष विज्ञान पर एक पाठ पढ़ा रहे होते हैं। उन्होंने अपने छात्रों से पूछा, "वृक्ष के प्रमुख भाग कौन-कौन से होते हैं और उनका क्या कार्य होता है?" इस प्रश्न के जवाब में छात्रों ने वृक्ष के मुख्य भागों का उल्लेख किया और उनके कार्यों के बारे में बताया। गुरु ने इसके उत्तर पर चर्चा की और छात्रों को सही जवाब देने के लिए प्रोत्साहित किया। इस प्रकार, छात्रों का ज्ञान विस्तारित हुआ और उन्हें स्वतंत्र विचार करने की प्रेरणा मिली।

वर्तमान समय में भी प्रश्नोत्तर विधि का महत्व है, जैसे की कक्षाओं में छात्रों से विभिन्न विषयों पर प्रश्न पूछे जाते हैं और उनके द्वारा दिए गए उत्तरों का मूल्यांकन किया जाता है। छात्रों को विषय के गहराई में समझाने और उनकी सोच को विकसित करने का मौका मिलता है।

इस उदाहरण से स्पष्ट होता है कि गुरुकुल पद्धति और वर्तमान समय की पद्धति में प्रश्नोत्तर विधि की प्रासंगिकता है।

उपसंहार:

वर्तमान समय में ज्ञान प्राप्ति के साधन के रूप में तकनीकी उपकरणों की अधिकता हुई है ,लेकिन प्रश्न उत्तर विधि के माध्यम से विद्यार्थी अपने विभिन्न प्रकार की जिज्ञासाओं, समस्याओं का समाधान करता है। एक अच्छे अधिगमकर्ता के रूप में उसके मन में विभिन्न प्रकार के प्रश्नों का उत्पन्न होना अत्यंत आवश्यक है । प्रश्नों के उत्पन्न होने से संवाद का एक मंच प्राप्त होता है ,उससे विद्यार्थी में तर्क ,चिंतन क्षमता का विकास भी होता है। एक कुशल, तार्किक, चिंतनशील विद्यार्थी में स्वत ही आत्मविश्वास का संचार हो जाता है। अतः प्राचीन काल से वर्तमान समय तक

 Copyright @ 2024 Author

की स्थिति में संवाद की प्रमुख प्रश्नोत्तर विधि का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। प्रश्नोत्तर विधि को गुरुकुल एवं वर्तमान शिक्षण पद्धति की आत्मा के रूप में देखना एवं मानना उचित प्रतीत होता है।

संदर्भ:

- सक्सेना, एन.आर. स्वरूप एवं चतुर्वेदी, शिखा:(2007) 'शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धांत', वॉल्यूम 1, मेरठ, आर. लाल बुक डिपो।
- शास्त्री,दैवदत्त (1953):"भारतीय दर्शन", बनारस, मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन।
- राधाकृष्णन (1948):"भारतीय दर्शन कोश", दिल्ली, जीवनमुखी प्रकाशन।
- गाँधी, मोहनदास कर्मचंद(1925) : "भारतीय दर्शन", अहमदाबाद, नवजीवन प्रकाशन, ।

 Copyright @ 2024 Author